Class - VIII

Subject - Hindi (H)

खण्ड - ख

3. i) भावनाएं → भावनाएँ
(2) ii) प्रशसा → प्रशंसा

4. उपसर्ग + मूल शब्द = शब्द
(2) सु + कन्या = सुकन्या

ख) रंग + ईला = रंगीला

5. क) i) उपाध्यक्ष = उप + अध्यक्ष
(2) ~~ii) जगदीश = जगत~~
iii) षडानन = षट् + आनन

ख) i) उत् + चारण = उच्चारण

6. भाववाचक संज्ञा -
(1) युवक = यौवन
देव = ~~देवक~~ देवत्व

7. क) i) पृथ्वी - धरा, वसुधा
ii) आग - अग्नि, अनल

ख) उत्तीर्ण का विलोम - ~~अनुत्तीर्ण~~ अनुत्तीर्ण
3 ग) ~~स्वज~~ स्वजन्मा

8. क) i) ~~श~~ श्याम अच्छा खिलाड़ी है और पढ़ने में भी तेज़ है।
ii) मैं परीक्षा देने मुंबई जा रहा हूँ।
3
ख) इच्छाबोधक वाक्य

1 9. यह काम कर तो लेने दो।

10. क) विग्रह — समास का नाम

ii) पेट भरकर — अव्ययीभाव समास
2
ख) i) अमीर - गरीब

11. क) दोनों हिल-मिलकर ~~अमन~~-चैन से रहें।
2 ख) विस्मयादिबोधक (!) चिह्न, प्रश्नसूचक (?) चिह्न।

12. 1) एड़ी चोटी का ज़ोर लगाना
अर्थ- बहुत मेहनत करना

(2) वाक्य - अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मैंने एड़ी चोटी का ज़ोर लगा दिया।

13. श्लेष अलंकार -
जब एक शब्द के दो अर्थ होते हैं, वहाँ श्लेष अलंकार होता है

यमक अलंकार -
जब एक शब्द की आवृत्ति एक से अधिक बार हो और हर बार उस शब्द का एक अलग अर्थ हो तो वहाँ यमक अलंकार होता है। उदहारण -
वह पाकर एक धोती, उसे प्रतिदिन धोती।
यहाँ 'धोती' शब्द की दो बार आवृत्ति हुए हैं और 'धोती' शब्द के दो अर्थ हैं - पहले धोती का मतलब है वस्त्र, दूसरी धोती का अर्थ है धोना (क्रिया)।

(2)

खण्ड - 'ग'

14.क) जैसे जिसे किसी प्रचंड चिंता ने पकड़ लिया, उसकी ज़िन्दगी ज़िंदगी खराब हो जाती है। चिंता को चिता के समान कहा गया है क्योंकि जैसी चिता की आग मृत व्यक्ति को जलाकर राख कर देती है वैसे चिंता भी ज़िंदा व्यक्ति को जलाकर राख

कर देती है।

ख) ईर्ष्या चिंता से बदतर है क्योंकि वह मनुष्य के मौलिक गुणों को ही कुंठित बना डालती है।

~~ग) मृत्यु चिंता से श्रेष्ठ बनती है क्योंकि~~

घ) ~~चिंता दग्ध~~ चिंता-दग्ध मनुष्य को ~~दया~~ समाज की दया का पात्र कहा गया है।

ङ) पाठ का नाम है- 'ईर्ष्या: तू न गई मेरे मन से', एवं लेखक का नाम है - ("रामधारी सिंह 'दिनकर'")।

ग) मृत्यु शायद फिर भी श्रेष्ठ है ~~बनिस्पद~~ बनिस्पत इसके कि हमें अपने गुणों को कुंठित बनाकर ~~ब~~ जीना पड़े।

15.क) ~~मै~~ चोटी न बढ़ने की शिकायत माता यशोदा से श्री कृष्ण कर रहे हैं।

ख) श्री कृष्ण बार-बार इस लालच में दूध पीते हैं कि उनकी ~~की~~ चोटी बलराम जैसी लंबी और मोटी हो जाएगी।

ग) 'बल' शब्द 'बलराम' के लिए प्रयोग किया गया है।

5

क) चोटी ~~नाग~~ नागिन के समान ज़मीन पर तब छूने लगेगी जब वह लंबी और मोटी हो जाएगी।

ङ) उपमा ~~अलंकार~~ अलंकार ।

16.ख) जब लेखक श्रीधर ~~से~~ से मिला तब श्रीधर ने उन्हें बॉल खेलने के लिए कहा और जब ~~वे~~ लेखक ने कहा कि उन्हें यह खेल नहीं आता तो वह हँस पड़ा। श्रीधर लेखक के उम्र का होते हुए भी उनसे ज़्यादा तगड़ा था, ज़्यादा दूध पी सकता ~~था~~ था और घोड़े पर भी चढ़ सकता था जो लेखक नहीं कर पाते। अपनी मजबूरी और अनाड़ीपन को देखकर लेखक को स्वयं पर झुंझलाहट हो रही थी।

ग) गरमी के मौसम में शाम तक गरम हवा चलती रहती है। ~~इस~~ गरम हवा ~~के~~ के थपेड़ों और उससे होने वाले कष्ट से बचने के लिए दोपहर बीत जाने के बाद संध्या के समय भी कोई बाहर नहीं निकलता है।

घ) जीवनलाल एक लोभी एवं गुस्सैल व्यक्ति हैं। वे दहेज-लोभी हैं जो बेटी और बहू में फ़र्क किया करते हैं। उन्होंने कमला के परिवार ~~परिवार~~ द्वारा कम दहेज देने पर उसकी विदाई रोक दी। वे अभिमानी हैं और ज़िद्दी व्यक्ति हैं।

ङ) 'सोना' पाठ में लेखिका बद्रीनाथ की यात्रा पर अपनी कुत्ती फ्लोरा को लेकर गई। यह इसलिए क्योंकि बाकि पालतू जानवर लेखिका के बिना रह लेते लेकिन ~~फ्लोरा~~ फ्लोरा उनके बिना नहीं रह सकती।

च) हेलेन केलर के जीवन से हमें यह सीख मिलती है ~~कि~~ कि सच्ची निष्ठा, दृढ़ता, लगन एवं निरंतर अभ्यास से कुछ भी संभव बनाया जा सकता है। हमें ~~यह~~ यह भी सीख मिलती है कि अगर हमारी सोच सकारात्मक हो तो नकारात्मक का अस्तित्व समाप्त हो जाता है और तब हम सीमाओं को अच्छे अवसरों में बदल सकते हैं और पूर्णता एवं संतुष्टता का अनुभव कर सकते हैं।

12

छ) नीत्से ने ईर्ष्यालु लोगों को बाज़ार की मक्खियों के समान बताया है। यह मक्खियाँ सामने से अच्छा व्यवहार करती हैं परंतु हमारे पीठ पीछे हमारी ~~निंदा~~ निंदा करती हैं।

17. क) केबल टी.वी. नई पीढ़ी के लिए बहुत नुकसानदेह है। इससे बच्चों की पढ़ाई का समय तथा दैनिक कार्य का समय बुरी तरह से प्रभावित होता है। इससे ~~उनकी~~ उनकी पढ़ाई ~~पर~~ पर तो असर पड़ता-ही-पड़ता है, उनकी नज़र

भी कमज़ोर हो जाती है। बच्चों में मूल्यों का गिरता स्तर, विकृत मानसिकता, चिड़चिड़ापन आदि केबल टी.वी. की ही देन है। बच्चे सुबह देर में उठते हैं जिससे उनके शरीर पर दुष्प्रभाव पड़ता है। इसलिए केबल टी.वी नई पीढ़ी के लिए मानसिक और शारीरिक रूप से नुकसानदेह है।

ख) गाँधीजी कभी भी अपने विचार दूसरों पर ज़बरदस्ती नहीं डालते थे। वे सभी के विचार तथा स्वभाव को स्वीकार करते थे। वे अहिंसा में विश्वास रखते थे। उनका मानना था कि अहिंसा में भगवान है। वे कहते थे कि मनुष्य में ईश्वर है, यही मानना भगवान पर सच्चा विश्वास रखना है। इसलिए भगवान का नाम लेने के साथ-साथ हमें मनुष्य के प्रति प्रेम और सेवा का भाव भी रखना होगा। वे कागज़ का अपव्यय रोकते थे ताकि वे पेड़ बचा सकें। वे हर काम पहले खुद करते थे फिर दूसरों को सलाह देते थे। वे सिर्फ़ एक अच्छे उपदेशक नहीं, वे कर्मयोगी भी। गाँधीजी के यह सभी मूल्य जैसे स्वच्छता, कागज़ का सदुपयोग, नम्रता, भगवान पर विश्वास, अहिंसा, मनुष्य के प्रति प्रेम और सेवा, पहले खुद कर्मयोगी बनना आदि को

ग्रहण करूँगी।

ग) बातचीत की कला में निपुण होने लिए हमें निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए -

i) हमें सतत अभ्यास एवं साधना करनी होगी।

ii) अपनी बातचीत का दूसरों पर तथा दूसरों की बातचीत पर अपनी प्रतिक्रिया पर ध्यान रखें। इससे आत्मचिंतन तथा आत्मशोधन में मदद मिलेगी।

iii) अधिक सुनना चाहिए तथा कम बोलना चाहिए।

iv) आवेश में बात करना, बातचीत में अतिप्रगल्भता, आवश्यकता से अधिक बोलना आदि बातचीत की कला को विकलांग बना देती है। अतः हमें बात करते समय सतर्क रहना होगा।

v) इसके साथ-साथ सद्ग्रंथों का अध्ययन तथा विद्वानों के संगठनों, सभाएँ आदि में उपस्थित होना अत्यंत लाभप्रद सिद्ध होता है।

घ) 'कामचोर' कहानी से आज के युवा वर्ग को यह संदेश देती है कि परीवारवालों को बचपन से बच्चों को थोड़ा-थोड़ा काम सिखाना चाहिए ताकि वे बड़े होकर अपना काम खुद कर सकें। जैसे 'कामचोर' कहानी

में बच्चों को काम करने के लिए कहा गया तो उन्होंने सारा सामान ईधर-ऊधर बिखेर दिया और एक भी काम ठीक से नहीं कर पाए क्योंकि बचपन से सारे काम उनके नौकर करते थे। इस कहानी से पता चलता है कि स्वयं काम न करने से कितना नुकसान होता है। इसलिए आज के पीढ़ी को भी खुद अपना काम करना सिखना चाहिए क्योंकि बड़े होकर उन्हें अपने पैरों पर खड़ा होना ही होगा। तो इससे हमें संदेश मिलता है कि युवा वर्ग को अपना काम करना सिखाना चाहिए ताकि बड़े होकर उन्हें कठिनाई न हो।

च) ईर्ष्या का एक अनोखा वरदान है। जिसके मन में ईर्ष्या पैदा होती है वह अपनी वस्तुओं से आनंद नहीं उठाता, वह दूसरों की वस्तुओं से दुख उठाता है। वह खुद की तुलना दूसरों से करता है और इस तुलना में उसके पक्ष के सारे अभाव उसके हृदय पर दंश मारते रहते हैं। जैसे 'ईर्ष्या: तू न गई मेरे मन से' पाठ में वकिल साहब एक बहुत ही अच्छे खाती-पीते परीवार के थे। उनका एक बाल-बच्चों से भरा-पूरा परीवार, सुख देने वाले नौकर एवं मृदुभाषीणि पत्नी थी लेकिन वे पड़ोस के बीमा एजेंट की मोटर, मासिक आय से जलते थे। भगवान ने उन्हें जो दिया था वे उससे खुश न होकर

(18) अपने अभावों से दुखी थे। इसलिए लेखक ने ईर्ष्या को अनोखा वरदान कहा है।

18. कल्पना एक दृढ़ इच्छा शक्ति वाली लड़की थी। कक्षा में अकेली छात्रा होकर भी उसने अपनी अलग छाप छोड़ी थी। स्नातक के बाद वैवाहिक संसार एवं ~~अच्छी~~ अच्छी नौकरी के बारे में न सोचकर वह कुछ अलग सोचती थी। उसने बचपन से अंतरिक्ष में जाने का दृढ़ निश्चय कर लिया था। वह अमेरिका में जाकर अपने आप को वहाँ के परिस्थितियों में बहुत अच्छी तरह से ढाल लिया। वह ~~बहुत~~ बहुत अच्छी श्रोता भी एवं वह समय का हमेशा सदुपयोग करती थी। कठिन परिश्रम एवं लगन से उसने अपना लक्ष्य प्राप्त कर लिया। ~~उसने~~ उसने लक्ष्य प्राप्त करने के लिए ऐड़ी चोटी का ज़ोर लगा दिया था। आखिर में वह नासा द्वारा अंतरिक्ष की यात्रा पर गई। कल्पना में बहुत से अच्छे गुण थे। मुझे उसकी लगन, उत्साह, परिश्रम, निष्ठा, इच्छा शक्ति, लगन, विश्वास, कुछ करने की इच्छा, समय का सदुपयोग, परिवेश में ढलना आदि गुणों को अपनाने की प्रेरणा मिलती है।

खण्ड-क

क) साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। क्योंकि साहित्यकार जो भी लिखे उसके पीछे वही सामाजिक परिवेश होता है, जिसमें वह रह रहा है।

ग) समाज का दर्पण होने पर भी ऐसा साहित्य अपना मूल्य तब खो देता है जब उनकी समस्याओं का हल प्रस्तुत हो जाता है। ऐसा साहित्य कुछ वर्षों तक युग में रहता है परंतु परिस्थितियों के बदल जाने पर वह नष्ट हो जाता है।

घ) शाश्वत साहित्य का तात्पर्य है वो साहित्य जो अपने युग का प्रतिनिधित्व करते हुए युग-युग का बन जाता है। वह किसी काल की सीमा-रेखा से बंधा नहीं होता।

ङ) शाश्वत साहित्य अपने युग में उतना सम्मानित नहीं होता जितना भविष्य में। क्योंकि वह अपने युग का प्रतिनिधित्व करते हुए युग-युग का बन जाता है।

च) शाश्वत का विलोम है - नश्वर।

ख) साहित्यकार जो भी लिखे उसके पीछे वही सामाजिक परिवेश

होता है, जिसमें वह रह रहा है जबकि पत्रकार सामाजिक
(9) स्थितियों से प्रेरणा ग्रहण कर उन्हें कल्पना और कलात्मकता
से प्रस्तुत करता है।

२.क) सतपुड़ा के जंगल अनमने हैं क्योंकि यहाँ ऊँचे-नीचे झाड़
हैं जिसमें पार करना मुश्किल है और यहाँ पंक दल
है जिस पर पत्ते गिरे हैं पेड़ों से और जिसे दलना या
जिससे गुज़रना कठिन है। इस जंगल में कोई आता-जाता
भी नहीं है।

ख) 'घंस न पाती हवा' का अर्थ है कि इन जंगलों में हवा
(5) तक नहीं घुस पाती तो इंसान कैसे जाएगा। यह घने
होने का या जिसमें न छुआ जा सके यह अत्यंत घने
होने का प्रतीक है।

ग) जंगल को घिनौना कहा गया है क्योंकि यहाँ पंक दल
मौजूद है जिस पर पत्ते गिरे हैं जो सड़े हुए पीले पत्ते
हैं।

घ) उपमा अलंकार।

ङ) जंगल के का रास्ता सड़े हुए पत्तों, गले हुए पत्तों, हरे पत्तों एवं जले पत्तों से ढका हुआ है।

खण्ड - घ

19. i)

स्वस्थ जीवन के लिए व्यायाम

व्यायाम स्वस्थ जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। बिना व्यायाम के स्वस्थ शरीर रखना असंभव है। व्यायाम हमारे शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। व्यायाम से हमारा शरीर चुस्त ~~और स्वस्थ~~ रहता है और फूर्ती का अनुभव होता है। व्यायाम से हमारा मन भी शांत होता है। हमारा शरीर और तगड़ा और मज़बूत बन जाता है। बिना व्यायाम के हमारे शरीर में अनेक रोग होते हैं जैसे डाइबेटीस, ओबेसीटी आदि। हमारा शरीर भारी बन जाता है और रोगों को आकर्षित करने लगता है। हर रोज़ व्यायाम करने से हमारी पाचन शक्ति ठीक रहती है। हम और भी चुस्त बनते हैं। ~~बिना~~ व्यायाम करने से लोगों की आयु भी बढ़ती है। जो व्यायाम करते हैं वे रोगमुक्त होते हैं और खुश होते हैं। व्यायाम हमारे सामाजिक स्थिति को भी सुधारता है।

अगर हम चुस्त और ~~खुश~~ खुश रहें तो लोग अपने आप आकर्षित होते हैं और चारों ओर का माहौल खुशनुमा रहता है। अगर हम व्यायाम न करें तो हम रोगरहित और दुखि रहेंगे और लोग भी हमसे दोस्ती करना ~~पसंद~~ पसंद नहीं करेंगे। इसलिए एक स्वस्त जीवन की शुरुआत प्रतिदिन के व्यायाम से होती है।

करो व्यायाम, रहो स्वस्थ!

२०. सेवा में,

प्रधानाचार्या ~~महो~~ महोदया

डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल

विषय - विद्यालय में प्रवेश हेतु प्रार्थना पत्र

मान्यवर,

मैं, आठवीं कक्षा की छात्रा हूँ, और यह पत्र मैं आपको प्रवेश हेतु लिख रही हूँ। आज सुबह मैं साइकिल से जब विद्यालय आ रही थी तो अचानक मेरी साइकिल बीच रास्ते में ~~रुक~~ रुक गई। मैंने देखा तो ~~साइ~~ साइकिल खराब हो गई थी क्योंकि साइकिल के टायर में पंचर हो गया था। मैं जल्द से जल्द उसे ठीक करवाने के

लिए नज़दीकी दुकान में गई परंतु वहाँ भीड़ थी। इसलिए मैं साइकिल वहाँ छोड़कर चलकर विद्यालय आई परंतु इन सब कामों में विद्यालय में पहुँचने में मुझे थोड़ा विलंब हो गया।
मेरा आपसे अनुरोध है कि कृपया मुझे विद्यालय में विलंब से प्रवेश करने की आज्ञा दें। मैं आपकी आभारी रहूँगी अगर आप मेरी निवेदन स्वीकार करें।

सधन्यवाद,
~~मधुरिमा~~ आपकी आज्ञाकारी,
मधुरिमा,
कक्षा - आठवीं, वर्ग - ई
दि. - २४/०२/२०२६

२. २४/०२/२०२६, शनिवार
रात 10:30 बजे

आज अचानक मम्मी से बात करते समय मुझे बचपन की एक रोचक घटना स्मरण हुई। जब मैं तीसरी कक्षा में थी तब मेरी दीदी को नौकरी मिल गई थी और उसे ट्रेनिंग के लिए ~~मईसोर~~ जाना था। हम सबने तय किया

कि मईसोर जाकर हम घूमकर और फिर उसे वहाँ होस्टल में छोड़कर आएँ। अब उन्हें लेकिन हमें वहाँ जल्दी पहुँचना था इसलिए हमने हवाईजहाज़ की दो चार टिकटें करवाईं। वह मेरी पहली हवाईजहाज़ की यात्रा थी। मैं बहुत खुश थी और हवाईजहाज़ में मुझे बहुत मज़ा आया था। हम बेंगालुरु पहुँचे फिर वहाँ से ट्रेन में चढ़े फिर मईसोर पहुँचे। पहुँचते ही हमने होटल में अपना सामान रख दिया और थोड़ी देर आराम किया। फिर शाम को हम सब 'विंडो शॉपिंग' करने निकले और खाना खाकर वापिस आ गया। अगले दिन हम मंदिर में गए। मईसोर में बहुत ऊँचे एवं सुंदर पहाड़ हैं। वहाँ एक मंदिर पहाड़ पर स्थित था। उस पहाड़ से शहर का नज़ारा ऐसा था मानो बादलों से नीचे देख रहे हों। मुझे इतना आनंद आया। फिर हम ~~जगह जगह~~ प्रसिद्ध स्थानों से घूमकर आए। मुझे सबसे सुंदर 'मईसोर पैलेस' लगा। वह एक बहुत सुंदर राजमहल था। फिर दो दिनों के घूमने के बाद हम घर वापिस लौट आए। सच कहूँ तो वह सफ़र मेरा सबसे आनंदमय सफ़र था और यह यादगार यात्रा मैं कभी न भूल पाऊँगी।

(५)

(7.ड) सुनहरे रंग के रेशमी लच्छों की गाँठ के समान उसका कोमल लघु शरीर था। छोटा सा मुँह और बड़ी - बड़ी पानीदार आँखें। देखकर लगता था मानों अभी छलक पड़ेगी। वह बहुत सुंदर थी।

— X —